Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)
(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)
NAAC Accredited 'B+'

Topic : आर्थिक समस्या : दुर्लभता व चयन [ECONOMIC PROBLEM: SCARCITY AND CHOICE]

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor
Dr. Ram Prawesh
Guest Faculty (Department of Economics)
L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

आर्थिक समस्या : दुर्लभता व चयन [ECONOMIC PROBLEM: SCARCITY AND CHOICE]

आर्थिक समस्या क्या है? (WHAT IS AN ECONOMIC PROBLEM?)

प्रत्येक परिवार की आय सदैव सीमित होती है। एक परिवार अपनी सीमित आय का प्रयोग आवश्यकता को सन्तुष्ट करने वाली किसी भी वस्तु या सेवा को खरीदने के लिए कर सकता है। इसी प्रकार प्रत्येक समाज अपने सीमित साधनों अर्थात् भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यम का प्रयोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करने के लिए कर सकता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि परिवार तथा समाज दोनों के ही साधन सीमित होते हैं। इसलिए यदि इनका प्रयोग एक वस्तु की प्राप्ति या उत्पादन के लिए किया जायेगा तो किसी दूसरी वस्तु का त्याग करना पड़ेगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति तथा समाज को अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह चुनाव करना पड़ता है कि वह अपने सीमित साधनों का प्रयोग कौन-सी वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करने के लिए करे तथा कौन-सी वस्तुओं तथा सेवाओं का त्याग कर दे ?

अत : "आवश्यकताओं की तुलना में साधनों की सीमितता ही हमारे सामने इस समस्या को जन्म देती है" कि हम अपनी किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किन-किन साधनों का कितनी-कितनी मात्रा में प्रयोग करें? इसके लिए हमें चयन या चुनाव करना पड़ता है। वस्तुतः "अर्थशास्त्र में इस चयन की समस्या का ही अध्ययन किया जाता है और इसे ही आर्थिक समस्या कहा जाता है।" अतः आर्थिक समस्या चुनाव की समस्या (Problem of Choice) या साधनों के बचतपूर्ण प्रयोग की समस्या (Economising Problem) है।[1]

परिभाषाएँ (Definitions)

1. **प्रो. एरिक रोल** के अनुसार, "आर्थिक समस्या मूलतः चयन की आवश्यकता से उत्पन्न होने वाली समस्या है। यह वह चयन है जिसमें वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। यह संसाधनों के मितव्ययी उपयोग की समस्या है। "
2. **प्रो लेफ्टविच** के अनुसार, "आर्थिक समस्या का सम्बन्ध वैकल्पिक मानवीय आवश्यकताओं में सीमित साधनों का प्रयोग करने और इन साधनों का इस दृष्टि से उपयोग करने से है कि आवश्यकताओं की अधिकतम सम्भव सन्तुष्टि हो सके। "

आर्थिक समस्या क्यों उत्पन्न होती है? (WHY DOES AN ECONOMIC PROBLEM ARISE ?)

अथवा (Or)

आर्थिक समस्या के कारण (CAUSES OF AN ECONOMIC PROBLEM)

आर्थिक समस्या मूलतः निम्न कारणों से उत्पन्न होती है-

1. **असीमित आवश्यकताएँ (Unlimited Wants)-** मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त और असीमित होती हैं। एक आवश्यकता के पूर्ण हो जाने पर नयी आवश्यकताएँ उत्पन्न होती रहती हैं। अतः मनुष्य की सभी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता है।

2. आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर (Difference in Wants)- आवश्यकताएँ तीव्रता की दृष्टि से भी भिन्न होती हैं अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के लिए कुछ आवश्यकताएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं और कुछ के लिए कम। अतः महत्व के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को प्राथमिकता के क्रम में रख सकता है।

3. आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन (Means) सीमित (Scarce) हैं- साधन की स्वल्पता से तात्पर्य है जितनी मात्रा में इन साधनों की माँग है, उनकी तुलना में यह कम उपलब्ध हैं। जो वस्तु मनुष्य की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की क्षमता रखती है, वह 'साधन' कहलाती है। साधन दो प्रकार के हो सकते हैं

(a) प्राकृतिक एवं

(b) मनुष्य के द्वारा निर्मित ।

दोनों ही प्रकार के साधन असीमित मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के दृष्टिकोण से सीमित होते हैं। उदाहरणार्थ, वन, पशु, झरने, जंगल, खनिज पदार्थ आदि जो प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं, उनकी मात्रा सीमित है। इस प्रकार मनुष्य द्वारा बनाये गये सभी साधन-कपड़ा, मुद्रा, इस्पात, सीमेण्ट - सीमित हैं।

एक सर्वव्यापी आर्थिक नियम को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है-

$$W>R;$$

यहाँ W आवश्यकताओं और R साधनों का सूचक है।

यदि सभी वस्तुएँ व सेवाएँ जल तथा वायु के समान प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होतीं तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता था।

'सीमित' अथवा 'दुर्लभता' का अर्थ माँग अथवा आवश्यकता की तुलना में सीमितता से है। जैसे कि प्रो. रॉबिन्स ने कहा कि 'खराब अण्डे' यद्यपि अच्छे अण्डों की तुलना में संख्या में कम होते हैं लेकिन उन्हें दर्लभ नहीं कहा जा सकता क्योंकि 'खराब अण्डों' की माँग नहीं रहती। अतः माँग को ध्यान में रखा जाये तो खराब अण्डे दुर्लभ नहीं कहे जा सकते। इसके विपरीत विश्व मण्डियों में करोड़ों टन खाद्यान्न उपलब्ध है लेकिन फिर भी खाद्यान्न 'दुर्लभ' ही कहे जाते हैं क्योंकि उनकी पूर्ति माँग की अपेक्षा कम ही रहती है। अतः किसी वस्तु की दुर्लभता केवल उसकी मात्रा के द्वारा ही नहीं बल्कि उसकी माँग के द्वारा भी निश्चित होती है।

साधन की माँग > साधन की पूर्ति

4. साधनों का वैकल्पिक प्रयोग (Alternative Uses of Resources) - साधन न केवल सीमित होते हैं बल्कि इनके वैकल्पिक उपयोग भी होते हैं। उदाहरण के लिए, बिजली का उपयोग बिजली के पंखे, कूलर, फ्रिज, रोशनी आदि में किया जा सकता है। अतः यहाँ भी हमारे सामने यह समस्या उत्पन्न हो जाती है कि हम किस साधन को किस काम के लिए प्रयोग करें।

5. चयन या चुनाव की समस्या (Problem of Choice) - उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी व्यक्ति, परिवार या देश अपने सीमित साधन से अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। अतः उनके सामने यह समस्या बनी रहती है कि वह अपने कौन-से साधन को कितनी मात्रा में कौन-सी आवश्यकता की पूर्ति में लगाये। अन्य शब्दों, में "उसके सामने चयन की समस्या उत्पन्न हो जाती है और चयन की समस्या ही आर्थिक समस्या कहलाती है।"

केन्द्रीय समस्याएँ/उत्पादन सम्भावना वक्र (Central Problems/Production Possibility Curve)

अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं को उत्पादन सम्भावना सारणी तथा उत्पादन सम्भावना वक्र की सहायता से प्रकट किया जा सकता है।

उत्पादन सम्भावना वक्र तथा अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं का अध्ययन करने से पूर्व हमारे लिए उपयोगी होगा कि हम यह अध्ययन कर लें कि उत्पादन सम्भावना वक्र क्या है?

उत्पादन सम्भावना वक्र की धारणा (The Concept of Production Possibility Curve)

उत्पादन सम्भावना वक्र इस विश्लेषण पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधन सीमित हैं किन्तु उत्पादित की जाने वाली वस्तुएँ असीमित हैं, फलतः अर्थव्यवस्था को साधनों के वैकल्पिक उपयोगों के बीच चयन करना पड़ता है। इस प्रकार वस्तुओं के उत्पादन के अनेक विकल्प अर्थव्यवस्था के सामने आते हैं जिन्हें अर्थव्यवस्था की उत्पादन सम्भावनाएँ कहते हैं। यदि इन उत्पादन सम्भावनाओं को रेखाचित्र के द्वारा प्रदर्शित किया जाये तो उनके द्वारा बनने वाली रेखा को उत्पादन सम्भावना वक्र कहते हैं।

परिभाषा (Definition) उत्पादन सम्भावना वक्र उन दो या दो से अधिक वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करने वाली रेखा है जिन्हें एक उत्पादन संस्थान या अर्थव्यवस्था में दिए हुए संसाधनों और तकनीकी ज्ञान के द्वारा एक समय विशेष पर उत्पादित किया जाता है। अर्थव्यवस्था में एक वस्तु के उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की मात्रा को कम करना पड़ता है। यही कारण है कि उत्पादन सम्भावना वक्र का झुकाव ऊपर से नीचे दाहिनी ओर होता है।

उत्पादन सम्भावना सारणी (Production Possibility Schedule) उपर्युक्त मान्यताओं को स्वीकार करने के बाद अर्थव्यवस्था उपलब्ध साधनों की सहायता से दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों का उत्पादन करने में समर्थ होती है।

प्रथम सम्भावना तो यह है कि सम्पूर्ण साधनों का प्रयोग केवल गेहूँ (उपभोक्ता वस्तु) के उत्पादन में किया गया हो। ऐसी अवस्था में मशीन (पूँजीगत वस्तु) का उत्पादन बिल्कुल नहीं होता है।

दूसरी सम्भावना यह हो सकती है कि समस्त प्रयोग केवल मशीन के लिए किया गया हो। तब गेहूँ का उत्पादन बिल्कुल नहीं होता।

तीसरी सम्भावना यह है कि अर्थव्यवस्था में कुछ साधनों का उपयोग गेहूँ के उत्पादन में और शेष साधनों का प्रयोग मशीन के उत्पादन में करें।

उत्पादन की विभिन्न सम्भावनाओं को उत्पादन सम्भावना सारणी में प्रदर्शित किया गया है-

सारणी 1 : उत्पादन सम्भावना सारणी

सम्भावना	गेहूँ (लाख इकाइयाँ) (उपभोक्ता वस्तु)	मशीनें (हजार इकाइयाँ) (पूँजीगत वस्तु)
पहली (A)	0	30
दूसरी (B)	1	28
तीसरी (C)	2	24
चौथी (D)	3	18
पाँचवीं (E)	4	10
छठी (F)	5	0

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है-

1. अर्थव्यवस्था में अधिक से अधिक ₹5 लाख इकाइयाँ गेहूँ की (और शून्य इकाई मशीन की) उत्पादित हो सकती हैं अथवा ₹30 हजार इकाइयाँ मशीन की (और शून्य गेहूँ की) उत्पादित हो सकती हैं।

2. इन चरम सीमाओं के अतिरिक्त उत्पादन की चार और सम्भावनाएँ हैं जिनमें विभिन्न मात्रा में गेहूँ और मशीन दोनों वस्तुओं का उत्पादन होता है। यह क्रम इस प्रकार है- 1 लाख इकाई गेहूँ और 28 हजार इकाई मशीनें अथवा 2 लाख इकाई गेहूँ और 24 हजार इकाई मशीनें अथवा 3 लाख इकाई गेहूँ और 18 हजार इकाई मशीनें या 4 लाख इकाई गेहूँ और 10 हजार इकाई मशीनें ।

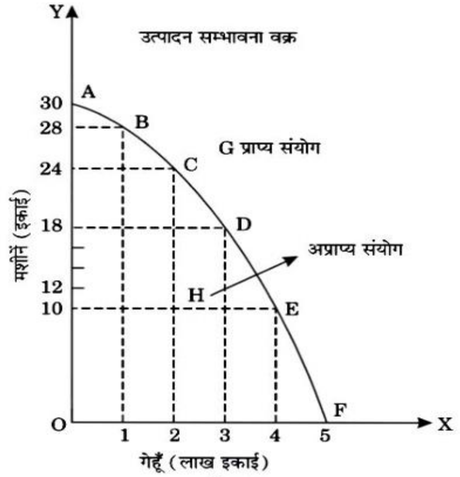

चित्र 1

इन सम्भावनाओं को उपर्युक्त चित्र 1 की सहायता से स्पष्ट किया गया है। चित्र में -

(i) बिन्दु A प्रथम सम्भावना को प्रकट करता है जिसमें केवल मशीनों का ही उत्पादन होता है। बिन्दु F दूसरी चरम सम्भावना को प्रकट करता है जिसमें गेहूँ का ही उत्पादन होता है।

(ii) इन दोनों के बीच में स्थित B,C तथा D व E बिन्दु दोनों वस्तुओं के उत्पादन की अन्य सम्भावनाओं को प्रकट करते हैं।

(iii) बिन्दु A, B, C, D, E तथा F को एक वक्र की सहायता से जोड़ने पर अर्थव्यवस्था का 'उत्पादन सम्भावना वक्र' प्राप्त होता है। इसको 'उत्पादन सम्भावना सीमा' भी कहा जाता है।

उत्पादन सम्भावना वक्र की मान्यताएँ (Assumptions of Production Possibility Curve)

उत्पादन सम्भावना वक्र निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है-

(a) अर्थव्यवस्था में केवल दो वस्तुएँ X तथा Y का उत्पादन हो रहा है।

(b) अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों की मात्रा निश्चित एवं स्थिर है।

(c) साधन विशिष्ट नहीं है अर्थात् उन्हें एक वस्तु के उत्पादन से हटाकर दूसरी वस्तु के उत्पादन में लगाया जा सकता है।

(d) प्रत्येक साधन पूर्ण रोजगार की स्थिति में हैं अर्थात् कोई भी साधन व्यर्थ या निष्प्रयोग नहीं है।

(e) अर्थशास्त्र में उत्पादन तकनीक अपरिवर्तित रहती है।

(f) संसाधनों का कुशलता के साथ प्रयोग होता है।